Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APRIL, 2021, VOL- 8/64

शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयी अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन

प्रियंका कुमारी

शोध अध्येता, जेजेटी विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनू

Paper Received On: 21 APRIL 2021

Peer Reviewed On: 28 APRIL 2021

Published On: 1 MAY 2021

Abstract

समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में, जो कभी सहायक है, तो तभी जटिल है और कभी हानिकारक है, अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है, जब हमारी आव यकताएं हों, जब हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनें और जब वातावरण, जिसमें कि हमें अपनी संतुष्टियां ढूंढनी हैं, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 में भी ज्ञान प्राप्ति में बच्चे द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर फिर से ज़ोर दिया गया है और सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन में 'ज्ञान का सामाजिक निर्माण' एक महत्वपूर्ण सिद्धांत रहा है। इस दिशा में अध्यापकों के लिए नवीन प्रयोगों व शोध कार्यो के साथ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद् का अपना महत्वपूर्ण योगदान है। इस अनुसंधान में शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयी अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन किया गया है। इस शोध हेतु न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा प्रत्येक जिले से 150 और कुल 450 शिक्षकों किया गया। इस अध्ययन में समस्त शेखावाटी क्षेत्र के पुरूष व महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है। शेखावाटी क्षेत्र के सामान्य और आरक्षित जाति वर्गानुसार अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

मुख्य शब्द : *शेखावाटी क्षेत्र, उच्च माध्यमिक विद्यालय, अध्यापक, समायोजन।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के विकास से है यह व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहार में समाजपयोगी परिवर्तन लाती है। शिक्षा एक विकासशील प्रक्रिया है जो अनवरत एवं हर जगह चलती है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक कुछ ना कुछ अवश्य सीखता है। इस प्रकार शिक्षा परस्पर सीखने–सिखाने की सतत् एवं अनवरत प्रक्रिया है एवं इसका मुख्य उद्देश्य जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। विद्यालय के पावन उद्दे यों का

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संवाहक अध्यापक होता है। अध्यापक एक ओर विद्यालयी उपलब्धियों का प्रत्यक्ष संरक्षक होता है तो दूसरी ओर संपूर्ण मानव जगत के लिये अभिनव प्रकाश पुंज भी होता है। उनके आदर्श ज्ञान, जीवन व्यक्तित्व व चिन्तन के एक एक प्रस्तर में विद्यालय रूपी मंदिर का अस्तित्व है। वह पाठ्यगामी क्रियाओं के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं तथा मूल्यांकन कार्य भी करता है। शिक्षा एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा सामाजिक रूप से परिवर्तन कर सकते हैं। जब समाज के ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षा समाज का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया।

एक शिक्षक में इन सभी अपेक्षाओं के तर्क के पीछे राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उद्धृत की गई इस अवधारणा को भी चेतना में रखना होगा कि – ''शिक्षा वर्तमान में भविष्य के लिए निवेश है। इस निवेश का निर्णायक घटक शिक्षक है।'' अतः भारत के भाग्य निर्माण में यह अध्ययन करना अत्यन्त आव यक हो जाता है कि शिक्षक के समायोजन की स्थितियाँ कैसी हैं? इन्हीं तत्वों से विद्यालय के वातावरण का निर्माण होता है जो कि अध्यापकों के समायोजन को प्रभावित करते हैं।

समायोजन– अर्थ एवं परिभाषाएं (Adjustment – Meaning and Definitions)

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार–संबंधी प्रक्रिया को **समायोजन (Adjustment)** कहते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाइयों एवं बाधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किए जाते हैं, उन्हें समायोजन कहते हैं। समायोजन से अभिप्राय है परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको बदलना, जिससे उस परिवेश में बिना टकराव के जीवन यापन किया जा सके। समायोजन एक संतुलित दशा है, जिस पर पहुंचने पर हम उस व्यक्ति को सुसमायोजित कहते हैं। यह समायोजन शब्द का काफी सामान्य और प्रचलित अर्थ है। इसके अर्थ को और अच्छी तरह स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमें विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई निम्न परिभाषाओं पर विचार करना अधिक उपयुक्त रहेगा।

एम.एस. शेफर (Shaffer) – समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक जीवित व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साइमण्ड के अनुसार – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से प्राणी अपने आप में परिवर्तन लाते हुए विभिन्न परिस्थितियों का सामना करता है।

सिंह, जेडी (Singh, JD) के अनुसार – समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति को उसकी जरूरतों और उनकी क्षमता के बीच संतुलन बनाए रखते हुए एक खुशहाल और संतुष्ट जीवन जीने में मदद करती है।

कॉलमेन (Coleman) के अनुसार – समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।

एच.सी. स्मिथ (Smith) के अनुसार – अच्छा समायोजन वह है, जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है।

समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताएं और उनको पूरा करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करने से है। जो व्यक्ति इन दोनों (परिस्थिति एवं आवश्यकता) के बीच तालमेल स्थापित नहीं कर पाता है, ऐसा व्यक्ति तनाव, चिंता, कुंठा आदि का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लग जाता है। इस असामान्य व्यवहार को कुसमायोजन/मानसिक रोग ग्रस्तता कहते हैं।

समायोजन संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हम किसी भी व्यक्ति के समायोजन क्षेत्रों को तीन मुख्य भागों– व्यक्तिगत, सामाजिक तथा व्यावसायिक में बाँटकर समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। कार्यप्रणाली तथा सामान्य स्वास्थ्य से संतुष्टि का अनुभव करने वाली बातें शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन के क्षेत्र में आती हैं। गहन अध्ययन व परीक्षण के उपरान्त शोधार्थी ने ऐसा क्षेत्र खोजने में सफलता प्राप्त की और उस क्षेत्र की समस्या 'शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन' को भोधार्थी द्वारा चुना गया है।

प्रस्तावित शोध कार्य की उपादेयता (Importance of proposed research work)

मानव जीवन बहुत समस्याग्रस्त है। जब भी वह जीवन में कुछ समस्याओं का सामना करता है, तो वे इन समस्याओं को कई तरीकों से दूर करने की कोशिश करते हैं। समायोजन का वही अर्थ है, हम कुछ अन्य शब्दों का उपयोग करते हैं जैसे– स्थिरता,

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामंजस्य, एकीकरण, अनुकूलन, रचना, समन्वय आदि सभी समायोजन की प्रक्रिया या तकनीकें हैं, जिसके द्वारा मानव जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक सहजता से चलता है। एक अध्यापक अपनी क्षमता से किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित करने या भविष्य को उज्ज्वल बनाने की आधार ाीला होता है। अध्यापक ही विद्यार्थियों की सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व संवेगात्मक विकास कर सकता है। यदि विद्यार्थियों का विकास अच्छी तरह होगा तो ही वह देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा। जब तक अध्यापक का शिक्षा कार्य प्रभावी नहीं होता, तब तक वह विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन नहीं ला सकता।

क्योंकि आज यह जरूरी हो गया है और समय की भी पुरजोर माँग है कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि व समायोजन का अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों और पहलुओं से किया जाए। क्योंकि अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि व समायोजन विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया और उसके मूल्यांकन में तो महती भूमिका निभाती हैं। इसके साथ वह अध्यापक की कार्यशैली, उसकी अध्यापन की विधियों तथा कक्षा व्यवहार, विद्यालय व्यवहार के तौर–तरीकों को भी प्रभावित करती हैं। इतना ही नहीं वे विद्यालय के अलावा विद्यालय के बाहर भी अध्यापक के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इस दृष्टि से यह अध्ययन अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

समस्या कथन (Statement of the Problem)

वर्तमान अनुसंधान कार्य हेतु समस्या को प्रस्तुत शोध विषय ''शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयी अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन'' शीर्षक के रूप में लिया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Research Study)

शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया है–

1. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन करना,
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष व महिला अध्यापकों के समायोजन की तुलना करना,

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. भाहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में परस्पर तुलना करना,

4. अधिक व कम अध्यापन अनुभवी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में परस्पर तुलना करना,

5. जाति वर्गानुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएं (Research Hypotheses)

शोध विषय की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष व महिला अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अधिक व कम अध्यापन अनुभवी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. जाति वर्गानुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या में प्रयुक्त शब्द परिभाषीकरण (Definition of the terms used in the study)

समायोजन– कॉलमैन के अनुसार ''समायोजन व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कठिनाईयों का सामना करने के प्रयास का परिणाम है। अच्छा समायोजन वह है, जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है– यह कुण्ठाओं, तनावों एवं दुश्चिन्ताओं को जहां तक संभव है कम करता है। समायोजन का अर्थ किसी प्रक्रिया में संलग्न विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों और भाक्तियों में इस प्रकार से सम्बन्ध स्थापित करना है कि उनमें किसी प्रकार का विरोध न हो और वे अपनी पूर्ण क्षमता के अनुरूप कार्य सम्पन्न कर सकें। प्रधानाचार्य का स्थान इस अंग में आता है, क्योंकि प्रधानाचार्य को विद्यालय में सभी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्टाफगण और साथ ही विद्यार्थियों के साथ समायोजन करके ही अपने नियमों और शैक्षिक गतिविधियों को आगे बढ़ा सकता है।

जनसंख्या व न्यादर्श (Population & Sampling)

यह शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है। विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के समायोजन संबंधी वास्तविक स्थिति को जानकर इन उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की स्थिति व विद्यालय वातावरण में उन्नयन के लिए सुझाव देने तक ही सीमित रहा है, इसका परिसीमन निम्नानुसार किया गया है–

(अ) क्षेत्रवार

1. यह अनुसंधान कार्य केवल राजस्थान राज्य के भोखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।
2. शोध हेतु शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।
3. इस शोध हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विभिन्न जाति वर्ग व अनुभव के महिला व पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया।

(ब) कुल न्यादर्श

न्यादर्श का चुनाव सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों से किया गया। न्यादर्श में जाति वर्ग, लिंग भेद, क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। इस भोधध हेतु न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इस भोधकार्य के लिए न्यादर्श कुल 450 शिक्षकों तक लिया गया तथा दत्त संग्रहण हेतु न्यादर्श इस प्रकार लिया गया–

क्रम संख्या	**शेखावाटी क्षेत्र के जिले का नाम**	**उच्च माध्यमिक विद्यालयी अध्यापक**
1.	सीकर	150
2.	झुन्झुनूं	150
3.	चूरु	150
कुल	**सम्पूर्ण क्षेत्र**	**450**

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चर (Variables)

इस अनुसंधान कार्य में निम्नांकित चरों के संबंध में अध्ययन किया गया–

1. **स्वतंत्र चर–** इस अध्ययन में निम्नांकित तीन स्वतंत्र चरों को सम्मिलित किया गया, जिन्हें आगे भी प्रत्येक को दो भागों में बांट कर अध्ययन किया गया–

अ. लिंग (Gender) –

1. पुरूश 2. महिला

ब. क्षेत्र (Area) –

1. शहरी 2. ग्रामीण क्षेत्र

स. अनुभव (Experience) –

1. उच्च (10 वर्श से अधिक) 2. निम्न (10 वर्श से कम)

द. वर्ग स्तर (Category level) –

1. अनारक्षित 2. आरक्षित

2. **आश्रित चर–** इसमें आश्रित चर समायोजन पर विभिन्न स्वतंत्र चरों के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

विधि, प्रविधि व उपकरण (Method, Tools & Techniques)

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन करने के लिए ''सर्वेक्षण विधि'' का चयन किया गया। इसके साथ ही अवलोकन व साक्षात्कार के माध्यम से भी दत्त इकठ्ठे किये गये थे। शोधार्थी द्वारा वर्तमान भाोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां (Statistical Techniques)

प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त विश्लेषण करने के लिए अग्रांकित सांख्यिकी का उपयोग किया गया–

1. प्रतिशतता (Percentage)
2. मध्यमान (Mean)

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. मानक विचलन (Standard Deviation)

4. टी– परीक्षण (t-Test)।

मुख्य निश्कर्श व सारां ा (Major findings and conclusions)

किसी भी शोध कार्य को करने के लिए उसका मुख्य भाग शोध का निश्कर्श निकालना होता है। प्रस्तुत शोधकार्य में दत्तों का वि लेशण तथा विवेचन करने के पश्चात् कुछ परिणाम सामने आये हैं, जिनके आधार पर निश्कर्श निकाले गये, जो इस प्रकार हैं–

1. सबसे अधिक लगभग 29 प्रतिशत पुरुश अध्यापकों के समायोजन स्तर के प्रति अभिवृत्ति औसत से कम व अधिक पायी गयी।

2. शेखावाटी क्षेत्र में सबसे अधिक 30 प्रतिशत महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संबंध में अभिवृत्ति उच्च पायी गयी।

3. सीकर जिले में पुरूष व महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

4. झुन्झुनूं जिले में पुरूष व महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

5. चूरु जिले में पुरूष व महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

6. समस्त शेखावाटी क्षेत्र के पुरूष व महिला अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

7. सीकर जिले में शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

8. झुन्झुनूं जिले में शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

9. चूरु जिले में शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

10. समस्त शेखावाटी क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

11. सीकर जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

12. झुन्झुनूं जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

13. चूरु जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

14. समस्त शेखावाटी क्षेत्र के अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

15. सीकर जिले में सामान्य और आरक्षित जाति वर्गानुसार अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

16. झुन्झुनूं जिले में सामान्य और आरक्षित जाति वर्गानुसार अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

17. चूरु जिले में सामान्य और आरक्षित जाति वर्गानुसार अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

18. समस्त शेखावाटी क्षेत्र के सामान्य और आरक्षित जाति वर्गानुसार अध्यापकों के समायोजन स्तर के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

शोध अध्ययन का प्रभाव (Implications of the study)

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन से शिक्षक अपने छात्रों से अच्छे से जुड़ सकेंगे तथा अपनी शैक्षिक समस्याओं का उचित हल कर सकेंगे। जिससे शिक्षा में गुणात्मक सुधार होगा, जो कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली की मांग है। शोध अध्ययन का प्रभाव छात्र, समाज, अभिभावक, अध्यापक व राष्ट्र पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से विभिन्न प्रकार से हो सकेगा। शिक्षण की दृष्टि से अध्यापक का समायोजित होना बहुत अनिवार्य है, जिसका सीधा प्रभाव शिक्षार्थियों की अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है। यदि शिक्षक अपने वृत्ति से संतुश्ट होगें, तो निश्चय ही ऐसे समाज का निर्माण होगा जो स्वास्थ्य मस्तिश्क और बौद्धिक प्रतिभा का धनी होगा। अतः अध्यापकों के समायोजन के बारें में अध्ययन करना एवं उनके स्वरूप का पता लगाना एक आव यकता आधारित राष्ट्र विकास का कार्यक्रम है। चिन्तन मानस की

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपर्युक्त दिशाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके परिणामों से निर्देशित होकर न केवल राष्ट्र की शिक्षा में सुधार की संभावनाएं बनेगी बल्कि श्रेष्ठ शिक्षक बनकर राष्ट्र के विद्यालयों में अच्छे विद्यार्थी उत्पन्न करने में सक्षम हो सकेंगे।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव (Suggestions for Further Studies)

शोध के उद्दे यानुसार स्थापित निष्कर्ष जहां एक ओर लक्ष्यपरक विशिष्ट सत्य की स्थापना करते हैं, वहीं दूसरी ओर भावी शोध हेतु दिशा भी प्रदान करते हैं। अतः इस दिशा में निम्न शोध कार्य भावी शोध हेतु अपेक्षित है।

1. कार्यक्षमताओं एवं कार्य स्थायित्व के परिप्रेक्ष्य में सेवारत महिला व पुरूष अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम एवम् अंग्रेजी माध्यम के अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
3. प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन।
4. सामान्य एवम् अनुसूचित जाति के अध्यापकों के समायोजन का का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सेवारत अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि, मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन का अध्ययन।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के व्यक्तित्व व भावात्मक बौद्धिकता का उनके समायोजन स्तरों पर पड़ने वाले प्रभाव का वि लेषणात्मक अध्ययन।
7. अध्यापकों के समायोजन का उनके व्यक्तित्व, आत्मवि वास एवम् शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

यादव, सर्वेश कुमार (2018). शिक्षक प्रशिक्षण स्तर पर शिक्षको की वृत्ति संतुष्टि तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. ***KAAV International Journal Of Arts, Humanities & Social Sciences. Oct-Dec (2018) /Vol-5/ISS-4/A4 Page No. 23-27 http://www.kaavpublications.org/abstract/article-2172.pdf***

कपिल एच. के. (1999). अनुसंधान विधियां व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.

कौल, लोकेश (2009) मेथडालाजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च. नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुमार, राजेन्द्र (2018). तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय में अभिरूचि और संतुष्टि का अध्ययन. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language. Dec-Jan 2018, VOL- 5/25.

मंगल, एस.के. (1987). मैनुअल फार टीचर एडजस्टमेन्ट इनवेन्टरी. आगरा : नेशनल सायकोलाजी कार्पोरेशन.

मंगल, एस.के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.

राजेश कुमार सिंह व राजेन्द्र कुमार जायसवाल (2006). सरकारी एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा. जुलाई 2006.
http://www.ncert.nic.in/publication/journals/pdf_files/adhunik_shiksha/oct-06/bhartiya_adhunik_july_oct06.pdf

शर्मा, कविता (2017). सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. International Journal of Education and Science Research Review. August- 2017, Volume-4, Issue-4. www.ijesrr.org

शर्मा, विनय मोहन (1973). शोध प्रविधि. दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हॉउस.

सुखिया एम.पी. एवं मल्होत्रा, पी. वी. (1994). शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.

सुनील कुमार व नितिन कुमार वर्मा (2015). कानपुर वि वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवम् अनुदान प्राप्त शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन. IRJMST. Vol. 6, Issue 12 (Year 2015) ISSN 2250 – 1959 (0nline).

उज्जवल कुमार हलधर व राधा रानी रॉय (2018). पश्चिम बंगाल में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के समायोजन और व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन.
https://www.researchgate.net/publication/327237604_Teacher_Adjustment_and_Job_Satisfaction_of_Secondary_School_Teachers.

लक्ष्मी सिंह, विजय शुक्ला, (2018). शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, बहुविषयक अकादमिक अनुसंधान. Year: Jan, 2018 Volume: 14/ Issue: 2 URL:http://ignited.in/a/57782

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies